

# End the uncertainly

The Department of Telecom, DoT, choose a correct step but at a very wrong time to start the process of absorption of ITS officers in BSNL. The absorption was no doubt over due. The BSNL after attaining the loss of more than Rs. 6,000/- crores was showing upward trend for last six months but suddenly got set back due to absorption process. Near about 387 officers have been repatriated to DoT as per their choice and option. After this an atmosphere of uncertainty is prevailing in the field as how long the remaining will continue in the company? Most officers have started showing disinclination and disinterest in the affairs of growth of the company forgetting their past contributions. Some officers have become hostile also to the cause of company due to polluted atmosphere created by interested quarters. These are seriously damaging the interest of the company. Reports are coming that the departments of Railway, Defence, Local administration etc. anxious to get BSNL mobile service have been discouraged and disappointed forcing them to move to private operators. This is not only unfortunate but painful also.

Today, the company is in loss which can be wiped out by generating more and more revenue by selling our products and expansion. But these are disturbed due to uncertainty. The BSNL Hqr must come out with clear cut decision for how much period the ITS will be retained in the company to enable them to take decision. Once target period for their repatriation is fixed they may be asked to work and be held responsible for their non-performance. ***The tainted, non-performers and charge sheeted officer of course have no place in the company and they should be told Ta Ta in clear terms.***

The management must act very fast and firmly to end the present uncertainty for betterment of the company otherwise its interests will be damaged beyond repair.

**Meeting between BSNLWA unions and BSNL Management held on 12th December on Strike demand. No positive result organise strike on 15th whole heartedly. ■**

## संशयात्मक स्थिति दूर करो

यद्यपि आईटीएस अधिकारियों के बीएसएनएल में सामंजस्य का मुद्दा चिरलंबित मुद्दा हो गया है, फिर भी दूरसंचार विभाग (डीआइटी) ने आईटीएस मुद्दे के लिए उपयुक्त समय का चुनाव नहीं किया। एक ओर कंपनी 6 करोड़ रुपये से अधिक हानि दर्ज करने के उपरांत पिछले छः महीनों से उर्ध्व गति यानी घनात्मक दिशा में अग्रसर हो रही थी। परंतु अचानक आईटीएस मुद्दा से ठहराव की स्थिति आ गई है। लगभग 387 आईटीएस अधिकारियों को उनके विकल्प के अनुसार डीओटी भेज दिया गया है परंतु इसके उपरांत संशयात्मक वातावरण तैयार हो गया है। शेष बचे आईटीएस अधिकारी कब तक इस कंपनी में रहेंगे किसी को पता नहीं है, ऐसी परिस्थिति में बहुतायद अधिकारी अपने जिम्मेवारी तथा कंपनी के विकास को नजरअंदाज कर रहे हैं। कुछ उच्चाधिकारी उकसावे में आकर आक्रामक हो गए हैं। ये लोग कंपनी को काफी नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसी खबर मिली है कि रेलवे, रक्षा, स्थानीय प्रशासन के लोग बीएसएनएल की मोबाइल सेवा से चिन्तित हैं और उन्हें दूसरे सेवा प्रदाता के तरफ भेज देने की जुगत बना रहे हैं।

आज कंपनी की घाटा को हम अपने कंपनी के विकास द्वारा एवं अपने उत्पादन को अधिकाधिक बाजार में पहुंचाकर अधिक राजस्व की उगाही कर सकते हैं। यह सभी असमंजस की स्थिति के कारण बाधित हैं।

बीएसएनएल मुख्यालय को यह स्पष्ट करना चाहिए कि बचे आईटीएस अधिकारी कब तक रहेंगे और इनकी जवाबदेही भी तय होनी चाहिए। असमंजस की तलवार हमेशा के लिए लटकाये रखना ठीक नहीं है।

एक बार रिपैटरियेशन की तिथि तय करने से सभी जिम्मेवारी से बंधेंगे। दागदार, अकर्मण्य एवं चार्जशीटेड – आईटीएस अधिकारियों को अविलंब विरमित किया जाय क्योंकि उनके लिए इस कंपनी में कोई जगह नहीं है।

प्रबंधन को पूर्ण इच्छाशक्ति के साथ ठोस कदम उठाना होगा तथा कंपनी के हित में संशय की स्थिति दूर करनी होगी अन्यथा इतना नुकसान हो जाएगा कि फिर इसकी भरपाई संभव नहीं होगी।

**बीएसएनएल वर्कर्स एलायंस संघों तथा बीएसएनएल प्रबंधन के मध्य 12 दिसंबर को बैठक सम्पन्न।  
परंतु परिणाम निरर्थक। अतः 15 दिसंबर को जोरदार हड़ताल संगठित करो।**